# अध्याय - तृतीय

## शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया


| | |
|---|---|
| 3.1 | प्रस्तावना |
| 3.2 | शोध कथन |
| 3.3 | न्यादर्श का चयन |
| 3.4 | शोध संबंधी उपकरण |
| 3.5 | उपकरणों का प्रशासन |
| 3.6 | प्रदत्तों का संकलन |

# अध्याय–तृतीय

## शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

### 3.1 प्रस्तावना :

बिना किसी शोध समस्या के इधर–उधर की निरूद्देशीय क्रियाओं से कभी–कभी चमत्कारिक परिणाम अवश्य प्राप्त हो जाते है, परन्तु अधिकांश स्थितियों की सही दिशा प्रदान करने के लिए किसी शोध समस्या का होना नितांत आवश्यक है।

शोध कार्य को कम समय एवं कम लागत में व्यवस्थित रूप से पूर्व निश्चित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शोध समस्या से संबंधित व्यवस्थित रूपरेखा या अभिकल्प तैयार किया जाता है। इसमें न्यादर्श के चयन की विशेष भूमिका होती है। न्यादर्श जितना अधिक सुदृढ़ होगा शोध परिणाम उतने ही विश्सनीय व परिशुद्ध होगे।

न्यादर्श के चयन के पश्चात् उपकरणों एवं तकनीक का चयन भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी के आधार पर प्रदत्तों का संकलन किया जाता है। तत्पश्चात् उपयुक्त सांख्यिकीय –विधियों के द्वारा प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या कर निष्कर्ष प्राप्त किया जाता है।

प्रस्तुत शोध के इस अध्ययन में प्रदत्तों का संकलन एवं प्रस्तुतीकरण निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया गया है –:

1. शोध कथन
2. न्यादर्श का चयन
3. शोध प्रारचना
4. निदर्शन
5. शोध संबंधी उपकरण
6. उपकरणों का प्रशासन
7. प्रदत्तों का संकलन

## 3.2 शोध कथन :

''बैगा–जनजाति की शिक्षा में आने वाली कठिनाईयाँः एक अध्ययन''

## 3.3 न्यादर्श का चयन :

किसी भी अनुसंधानकर्ता को अपने शोध रूपी भवन को बनाने के लिए न्यादर्शरूपी आधारशीला की आवश्यकता होती है। यह आधारशिला जितनी मजबूत होगी, शोधकार्य उतना ही सुदृढ़ होगा। अतः यथेष्ठ इकाईयों का न्यादर्श चुनकर संपूर्ण शोधक्षेत्र की विशेषताओं का अनुमान लगाया जा सकता है।

**पी.वी.यांग के अनुसार परिभाषा :–** ''निदर्शन किसी विशाल समूह, समस्त योग का अंश हैं जो कि समग्र का प्रतिनिधि हैं, अर्थात् अंश की भी वही विशेषताएँ है जो कि संपूर्ण समूह या समस्त की है।''

### 3.3.1 शोध प्रारचना :

Ethnographic Method के द्वारा बैगा–जनजाति की शिक्षा में भागीदारी की समस्या को देखा गया है। इसके लिए साक्षात्कार–अनुसूची (Interview Schedule) में निर्धारित किये गये मुक्त प्रश्न (open-ended Questions) द्वारा बैगा–समाज (Baiga Cammunity) का शिक्षा में भागीदारी की समस्या के संबंध में दृष्टिकोण (प्रतिसाद) जाना गया है।

### 3.3.2 निदर्शन :

निदर्शन हेतु उद्देश्यपूर्ण विधि (Purposive Method) का उपयोग किया गया है।

**उद्देश्यपूर्ण विधिसे तात्पर्यः–**

कुछ शोध कार्य न्यादर्श की प्रतिनिधित्वता नहीं करते वे अपने विशेष उद्देश्य के लिए एक विशेष उद्देशीय न्यादर्श चुनते हैं। अतः इसके लिए एक विशिष्ट समूह की आवश्यकता होती है इस विधि द्वारा–

1. एक विशेष समूह का अध्ययन कर सकते है।
2. अध्ययन की इकाईयों पर अच्छा नियंत्रण रहता है।
3. न्यादर्श समूह की तुलना भलिभाँति कर सकते है।

4. इस पद्धति में न्यादर्श का कार्य बहुत छोटा होता है। किन्तु प्रतिनिधित्वपूर्ण होता है।

उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा डिण्डौरी जिला के बैगाचक के 52 गांवों में से समनापुर विकासखण्ड के बैगागांव पौड़ी, समर्धा, कमको, पिपरिया का चयन किया गया है। जिसमें,

**शाला जाने वाले :**

6 बालक, 6 बालिकाओं एवं 6 बालक के माता-पिता, अभिभावक व 6 बालिकाओं के माता-पिता, अभिभावक से संपर्क किया गया। इस प्रकार कुल 24 इकाईयों को शोध अध्ययन में शामिल किया गया।

**शालात्यागी :**

6 बालक, 6 बालिकाओं एवं 6 बालक के माता-पिता, अभिभावक व 6 बालिकाओं के माता-पिता, अभिभावक से संपर्क किया गया। इस प्रकार कुल 24 इकाईयों को शोध अध्ययन में शामिल किया गया।

अतः शाला जाने वाले व शालात्यागी बालक-बालिकाएँ व उनके माता-पिता की कुल 48 शोध इकाईयों का अध्ययन कर गुणात्मक-विश्लेषण के द्वारा निष्कर्षो को प्राप्त किया गया।

### 3.3.3 शोध अध्ययन क्षेत्र समनापुर विकासखण्डः परिचय

इस विकासखण्ड के अंतर्गत विशेष-पद्धति जनजाति बैगा से संबंधित गांवों की संख्या 28 है। **प्रमुख बैगा गांव-**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | बीतनपुर | 2. | माड़ा गौरा माल | 5. | सरई माल |
| 3. | माल गौर रैयत | 4. | सरई वनग्राम | 6. | बीतल बहरा वनग्राम |
| 7. | पौड़ी वनग्राम | 8. | तेंदूटोला | 9. | चपवार |
| 10. | अजगर वनग्राम | 11. | रजनी सरई | 12. | लमोठा वनग्राम |
| 13. | घुरकुटा वनग्राम | 14. | कान्दावानी | 15. | नेवसा माल |
| 16. | बरगा | 17. | मोहती | 18. | समरधा वनग्राम |
| 19. | बरगांव रैयत | 20. | गौरा कन्हारी वनग्राम | 21. | ढावा वनग्राम |
| 23. | बंजारा वनग्राम | 24. | झामुल वनग्राम | 25. | रंजरा वनग्राम |
| 26. | रनगाँव | 27. | अतरिया | 28. | शैला टोला वनग्राम |

इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 33,945 हेक्टेयर हैं। यहाँ की प्रमुख फसल प्रायः रबि (गेहूँ चना, मसूर, अलसी, बटरी, राई, सरसो आदि )एवं खरीफ (धान, कोटो, कुटकी, मक्का, ज्वार, उड़द, रामतिल) आदि है। पशुओं में गाय, बैल, सुअर, कुत्ता, मुर्गा,–मुर्गी, बकरा–बकरी आदि पाले जाते है। यहाँ प्रायः बैगा जनजाति अपनी छप्पर पर सेम, कददू की बेल चढ़ाते हैं। इसके आलावा टमाटर, धनियाँ, मिर्ची भी उगाते हैं। प्रमुख पेड़ केला आम बांस साल, सागौन, तेदू पत्ता, महूँआ आदि है। भूमि 4971.71 एकड़ में है।

शोध अध्ययन क्षेत्र डिण्डौरी शहर से 25 किलो मीटर दूर स्थित ग्रामीण पहाड़ी क्षेत्र हैं शहर से लगी मात्र एक मुख्य सड़क पक्की है। अन्य क्षेत्र में कच्ची सड़के व पगडंडियां है। यहाँ बंदरों का प्राकृतिक सौन्दर्य देखते ही बनता है। ग्रामीण व पहाड़ी अंचलों में प्रायः प्राथमिक शालायें एवं आंगनबाड़ीयाँ है उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु बैगा छात्र/छात्राओं को शहर की सीमा से लगे स्कूलों में आना पड़ता है। यहाँ कुल बैगा जनजातीय जनसंख्या 2004–05 बेस लाई सर्वेक्षण के अनुसार 4,259 है। कुल 920 परिवार संख्या है। इनमें 2,133 पुरूष एवं 2,126 महिला है।

### 3.3.4 शिक्षा की निम्न स्थितिः–

यहाँ शिक्षा की निम्नस्थिति का मुख्य कारण गरीबी व योजनाओं व शैक्षिक योजनाओं के प्रति जागरूकता का आभाव है। अधिकांश माता–पिता अशिक्षित है परन्तु वे अपने बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं कुल अशिक्षित व्यक्तियों की संख्या 4,119 हैं जबकि कुल शिक्षित व्यक्तियों की संख्या मात्र 140 है।

## तालिका 3.0

### शैक्षणिक –संस्थानों में दर्ज बैगा छात्र/छात्रा संख्या

| क्र. | शैक्षणिक संस्थान | दर्ज बैगा छात्र/छात्रा संख्या |
|---|---|---|
| 1. | प्राइमरी | 22 |
| 2. | माध्यमिक | 72 |
| 3. | हाई स्कूल | – |
| 4. | हायर सेकेण्डरी | 29 |
| 5. | स्नातक | 04 |
| 6. | स्नातकोत्तर | – |
| 7. | तकनीकी शिक्षा | – |
| 8. | डिप्लोमा | – |
| 9. | अन्य | – |

स्त्रोत : बैगा विकास प्राधिकरण, जिला डिण्डौरी, 2005

अतः यहाँ की मुख्य समस्या स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि व रोजगार का पर्याप्त आभाव है। रोजगार के रूप में प्रायः यहाँ कृषि, कृषि मजदूरी व मजंदूरी है। इस कारण यहाँ बैगा परिवारों की औसत मासिक आय 600 रूपये है। अतः

## तालिका 3.1

### विशेष पिछड़ी जनजाति की प्रमुख समस्या एवं उससे संबंधित गांवो की संख्या

| क्र. | समस्या | ग्राम संख्या |
|---|---|---|
| 1. | स्वास्थ | 18 |
| 2. | शिक्षा | 09 |
| 3. | कृषि | 07 |
| 4. | रोजगार | 12 |

स्त्रोत : बैगा विकास प्राधिकरण, जिला डिण्डौरी, 2005

## 3.4 शोध संबंधी उपकरण :

किसी भी शोधकार्य को करते समय वैज्ञानिक–विधि से नवीन प्रदत्तों को संकलित करने हेतु मानकीकृत–उपकरणों व मानवनिर्मित उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है अतः अनुसंधान की सफलता शोध हेतु चयनित उपकरणों पर निर्भर करती है।

व्यवहारिक दृष्टि से उपकरण ऐसा होना चाहिए जिससे, अध्ययन में सुविधा रहे, उत्तरदाताओं में मैत्रीभाव बना रहे एवं अनुमति प्राप्त करने में कठिनाई न हो व उपकरणों के प्रशासन की प्रक्रिया बहुत कठिन तथा असुविधाजनक न हो।

प्रस्तुत शोधकार्य में स्वयं निर्मित साक्षात्कार –अनुसूची का उपयोग किया गया है जिसे विशेषज्ञों के परामर्श द्वारा तैयार किया गया।

**साक्षात्कार–अनुसूची की परिभाषा :**

साक्षात्कार–अनुसूची सूचनादाताओं से प्रत्यक्ष रूप में संपर्क स्थापित करके उनसे औपचारिक साक्षात्कार द्वारा प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने से संबंधित हैं। इसमें प्रश्नों की रचना पहले से ही की होती है और साक्षात्कारकर्ता या कार्यकर्ता इन्हें एक–एक करके सूचनादाता से पूछता है औरउनके उत्तर स्वयं लिखता है। यह साक्षात्कार को अधिक व्यवस्थित बनाने के लिए प्रयोग में लायी जाती है।

## 3.5 उपकरण का प्रशासन :

शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन क्षेत्र में जाकर शाला जाने वाले बालक एवं बालिका व उनके माता–पिता से व्यक्तिगत संपर्क द्वारा साक्षात्कार के माध्यम से शोध संबंधी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये गये।

चूँकि बैगा–जनजाति स्वाभावतः शर्मीली होती है अतः प्रारंभ में साक्षात्कर्ता को उनसे मैत्री संबंध बनाने पड़े तत्पश्चात् व्यवहारिक भाषा का उपयोग के द्वारा शोध संबंधी जानकारियाँ प्राप्त हुयी, तत्पश्चात् प्राप्त सामान्य

उत्तरों को कोड किया गया व अंक प्रणाली का प्रयोग करने से जो परिणाम प्राप्त हुये उन्हें तर्को के माध्यम से निष्कर्षित किया गया।

## 3.6 प्रदत्तों का संकलन :

साक्षात्कार-अनुसूची की सहायता से शोधार्थी द्वारा शोधक्षेत्र में जाकर बैगा शाला जाने वाले 6 बालक, 6 बालिका व 6 बालक के माता-पिता, 6 बालिका के माता-पिता एवं बैगा शाला त्यागी 6 बालक, 6 बालिका व 6 बालक के माता-पिता, 6 बालिका के माता-पिता से व्यक्तिगत संपर्क (बैगा प्रधान गांव में जाकर) स्थापित किया गया तथा सामान्य बोलचाल की भाषा का उपयोग करते हुये साक्षात्कार-अनुसूची से संबंधित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये गये इस प्रकार कुल 48 शोध इकाईयों की निदर्शन हेतु चयनित किया गया है जिनमें 12-12 प्रश्नावली की पृथक-पृथक श्रृंखला शाखा जाने वाले व शाला त्यागी के लिए स्वयं तैयार की गई। तत्पश्चात् प्रश्नों से संबंधित तथ्यों को संकलित किया गया।

| | |
|---|---|
| कुल 48 | 24 शाला जाने वाले बालक, बालिका व इनके माता-पिता<br>24 शालात्यागी बालक, बालिका व इनके माता-पिता |